''हिन्दुत्व और विश्वबंधुत्व, पारस्पिरिक सम्बन्ध का समीक्षात्मक अध्ययन''

प्रो0 आदित्य नारायण त्रिपाठी
आचार्य एवं अध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग,
संत तुलसीदास पी0जी0कालेज,कादीपुर, सुल्तानपुर।
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.163

भूमिका

हिंदुत्व को समझने के लिए हिन्दु धर्म को जानना अपरिहार्य है, इसे सनातन या वैदिक धर्म के नाम से भी जानते हैं। भारत की सिन्धु घाटी की सभ्यता में हिन्दु धर्म के विभिन्न चिह्न मिलते हैं। यह धर्म ज्ञात रूप में लगभग 12000 वर्ष प्राचीन है जबकि कतिपय पौराणिक मान्यताओ के अनुसार 90000 वर्ष पुराना है। विष्णु पुराण के इस श्लोक से हिन्दू भूमि के भौगोलिक सीमा की अभिव्यक्ति होती है, जो अधोलिखित है –

उत्तर यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्ष तद् भारत नाम भारती यत्र संततिः।। (विष्णु पुराण)

समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में जो देश है, उसे भारतवर्ष और उसकी संतानों को भारती कहते हैं। बृहस्पति आराम के इस श्लोक से भी हिन्दू देश की पुष्टि होती है–

हिमालयंसमारभ्य यावत इंदु सरोवरम्।
तं देव निर्मितं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।। (बृहस्पति आगम)

हिमालय से आरम्भ होकर हिन्द महासागर तक फैले हुए देव निर्मित भूमि को हिन्दुस्तान कहते हैं। यहां के निवासियों के द्वारा अंगीकृत विश्वास और धारणा को हिन्दू धर्म कहते हैं।

<u>हिन्दुत्व की विशेषताएं :</u>

विश्व के विभिन्न देशों में राजनीतिक लोकतंत्र, सामाजिक लोकतंत्र है, किन्तु हिन्दु विश्व का एकमात्र धर्म है जहां धार्मिक लोकतंत्र है हिन्दू धर्म की आत्मा हिन्दुत्व है जो किसी उपासना पद्धति से नहीं अपितु अनेकता मे ंएकता से प्रतिबिम्बित होती हैं।

धृतिः क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः
धीः विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

महर्षि मनु ने कहा कि धैर्य, क्षमा, इच्छाओं पर नियंत्रण, चोरी न करना, पवित्रता, इन्द्रियों पर नियंत्रण, बुद्धि विद्या, सत्य और अक्रोध धर्म के 10 लक्षण हैं।

<u>**केरी ब्राउन के अनुसार –**</u> हिन्दुत्व एक विचार है, जो कि हर प्रकार के विश्वासों पर विश्वास करता है, तथा धर्म, कर्म, अहिंसा, संस्कार व मोक्ष को मानता है और उनका पान करता है यह ज्ञान और स्नेह का मार्ग है।

विनायक दामोदर सावरकर ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ हिन्दुत्व में लिखा कि जिसकी पुण्यभमि और पितृ भूमि भारत है वे हिन्दू हैं।

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत में जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू है।

चीन में भारतीयों को इंदुरैन से सम्बोधित किया जाता है जो बृहस्पति आगम में वर्णित विचार की पुष्टि करता है हिन्दू शब्द भाववाचक है जिसका तात्पर्य है विविधता को महत्व देना यह विविधता हिन्दू के अंतरमन में बैठी हुई है विविधता के बिना हिन्दू शब्द की कल्पना करना अर्थहीन है, हिन्दू होने की इन सभी विशेषताओं के प्रति सजग होना इनका क्षरण न होने देना हिन्दुत्व है। समय–समय पर

हिन्दू धर्म की आंतरिक और वाह्रय चुनौतियों से लड़ने के लिए मनीषियों ने जो विचार दिया वह हिन्दुत्व है जातिवाद अस्पृश्यता बाल विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं को दूर करने का विचार हिन्दुत्व की अभिव्यक्ति करता है।

विपिन चन्द्र पाल ने The Soul of India नाम की पुस्तक लिखी जिसका उद्देश्य था हिन्दुओं में चेतना को जागृत करना। उनका मानना था कि भारत एक हिन्दु राष्ट्र है महात्मा गांधी का हिन्दुत्व सर्वग्राह्यता पर बल देता है जहां संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं है।

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं –

सर्व र्धान परित्यज्य मामेकंशरणं ब्रज।
अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

सभी प्रकार के धर्म का परित्याग करके मेरी शरण में आओ मैं समस्त पापों से तुम्हारा उद्धार कर दूंगा।

<u>हिन्दुत्व का महत्व</u>

हिन्दुत्व वैचारिक उत्कृष्टता का मापदण्ड है, जो उपासना पद्धति के आधार पर भेद नहीं करता यह मानव मात्र के प्रति ही नहीं अपितु प्राणि मात्र के प्रति संवेदनशील है। यहां कतिपय उद्धरणों को प्रस्तुत करके उपर्युक्त कथन को सिद्ध करने का यत्न किया गया है –

याज्ञवल्क्य स्मृति में धर्म की जिन विशेषताओं को उद्धत किया गया है वे हिन्दुत्व के महत्व को स्पष्ट रूप से दर्शाती है –

अहंसा सत्यमस्तेयं शौचमिनिन्द्रय निग्रहः।
दानं दमो दया शान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम्।।

(याज्ञवल्क्य स्मृति 1,122)

अहिंसा सत्य चोरी न करना स्वच्छता इंद्रिय निग्रह दान संयम दया और शांति धर्म के नौ लक्षण है – पद्म पुराण में धर्म के सार पर प्रकाश डाला गया है जो हिन्दुत्व की मूल भावना को प्रतिबिंबित करता है।

श्रूयतां धर्म सर्वस्वयं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

(पद्म पुराण सृष्टि 19,356)

धर्म का सर्वस्य क्या है, सुनो और सुनकर अनुगमन करो जो आचरण स्वयं के प्रतिकूल हो वैसा आचरण दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए।

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्री रामचरित मानस की यह पंक्ति हिन्दुत्व को बड़े ही सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त करत है –

परहित सरिस धर्म नहिं भाई
परपौड़ा सम नहिं अधमाई।

दसरे का कल्याण करना ही धर्म और दूसरो को पीड़ा पहुंचाना हीं अधर्म है।

हिन्दुत्व ओर विश्वबंधुत्व :

ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 164 वें सूक्त के 46 वें ऋचा में उद्धत है –

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निं माहुरथोदिव्यः स सुपर्णे गरूत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं मातरिश्वान माहुः। (ऋग्वेद)

जिसे लोग इद्रं, मित्र, वरुण, अग्नि कहते हैं। वह सत्ता केवल एक ही है। ऋषिगण उसे भिन्न–भिन्न नाम से पुकारते हैं। इस ऋचा के द्वारा जो सत्य प्रकट हुआ है। उसका भारतीय जीवन पद्धति पर बहुत गम्भीर और दूरगामी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इस सत्य ने एक सांचे का कार्य किया है जिसमें भारतीय अपने जीवन को यत्न करते हैं। इस मंत्र ने हमारे रंगों में उदारता के रक्त का

सांर किया है, जिसमें विश्व बंधुत्व की भावना अनुप्राणित होती है। विश्व के दूसरे संप्रदायों/मजहबों में यह दुर्लभ है विश्व के विभिन्न देशों में अल्प संख्यक समूहों को बराबरी के न तो अधिकार प्राप्त है और न तो विकास के अवसर जबकि भारत के पारसी बहुत ही लघु संख्या के अल्पसंख्यक धार्मिक समूह है किन्तु वह प्रतिष्ठित और सुरक्षित भी है। कतिपय मनीषियों ने उपर्युक्त मंत्र में पालिथेस्टिक अर्थात् बहुत देव वाद का दर्शन किया है। वास्तव में उन्होंने मंत्र के मर्म को जानने की चेष्टा ही नहीं कियार। प्रोफेसर मैक्स मूलर ने हिन्दुओं के इस चिंतन की विशिष्टता को हेनोथिज्म अर्थात् एकैकाधिक देववाद अंगीकार किया है। जिसका अर्थ यह है कि अनेक देवताओं में से एक को सर्वश्रेष्ठ मानकर उसकी उपासना करना मैक्स मूलर की यह धारणा भ्झी सम्पूर्ण सत्य को व्यक्त करने में विफल है। इस ऋचा में मंत्र दृष्टा के द्वारा यह कहा गया कि परम् सत्ता एक ही है, जिसे ऋषियों ने अलग–अलग नाम से अभिहित किया है। भारतीय ऋषियों के अनुभ्झव जन्य ज्ञान से प्रतिपादित एकता का दर्शन भारतीय संस्कृति के वैशिष्ट्य को निरूपित करता है। अथर्ववेद के इस मंत्र से सुद्दढ़ परिवार का निर्माण होता है, जिससे स्वस्थ समाज की रचना होती है।

मा भ्राता भ्रातरं द्वक्षिन मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यंचः सव्रताभूत्वा वांच वदत भद्रया।। (अर्थवेद 3,30,3)

उपर्युक्त मंत्र का अभिप्राय है कि भाई–भाई से और बहन–बहन से द्वेष न करें, एक दूसरे का सम्मान करते हुए भद्रभाव से परिपूर्ण होकर सम्भाषण करें।

गीता में श्री कृष्ण ने कहा कि जो भी जैसे भी जिस रूप में मेरे पास आता है मैं उसे उसी रूप में स्वीकार करता हूँ क्योंकि इस बह्मांड के सारे रास्ते चाहे वह कितने भी अलग–अलग क्यों न हों मुझमें (परमसत्य) ही आकर मिलते हैं।

स्वामी विवेकानन्द ने शिकागों की धर्म सभा के उद्घाटन भाषण में गीता का संदर्भ देते हुए श्री कृष्ण के कथन को द्धत किया तो सम्मुख आसनस्थ श्रोताओं की तालियों से सभा कक्ष गूंज उठा। सभी के लिए यह उद्बोधन अभिनव और प्रेरक था किन्तु भारत और विशेष रूप से हिन्दुओं के लिए चिर परिचित था। गीता के उपदेशों का भारत पर इतना गहरा प्रभाव था कि विभिन्न संप्रदायों के उद्धव और विस्तार के बाद भी पारस्परिक सद्धाव था। किन्तु जब से कुछ विदेशी आक्रांताओं ने हिंसा के द्वारा बलपूर्वक अपना संप्रदाय दूसरों पर थोपना आरम्भ किया तब से सांप्रदायिकता का जन्म हुआ। हिन्दू धर्म के अतिरिक्त किसी भी धर्म में समग्र चिंतन दृष्टिगोचर नहीं होता हैं, बिना धर्म परिवर्तन के सम्पूर्ण पृथ्वी को अपना परिवार मानने का आह्वन हिन्दू धर्म के अलावा किसी ने नहीं किया है।

अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्।।

हिन्दू धर्म ने मनुष्य को एक पूर्ण इकाई के रूप में स्वीकार करके उसके मानवीय विकास को रेखांकित किया है।

अष्ठादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

पाप और पुण्य की सम्पूर्ण मानवता के हित के लिए इतनी सरल और व्यापक व्याख्या अत्यंत समीचीन है कि यदि इसे हृदयंगम कर लिया जाए तो सम्पूर्ण विश्व से अशांति और रक्तपात समाप्त हो जाएगा।

मातृवत परदारांश्च पर द्रव्येषु लोष्ठवत।
आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति स पश्यति।।(चाणक्य नीति)

अन्य व्यक्तियों की पत्नियों को माता के समान, दूसरे के धन को ढेले के समान सभी प्राणियों को अपने सामान जो देखता है, सत्य अर्थों में वहीं देखता हैं।

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मां कश्चिद दुःख भाग्भवेत।।

सभी सुखी होवे सभी रोग मुक्त होंवे, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बने और किसी को भी दुख का भागी न बनना पड़े। भारतीय ऋषियों ने जिस सामाजिकता के प्रवाह से शताब्दिदयों से इस धरती को अभिसिंचित किया है, उसी के सार तत्व को गीता कहते हैं। सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय समावेश्ज्ञी होने के कारण पथ वैभिन्नयको स्वीकार करता है, उसकी मान्यता है कि मनुर्भव। इस धरा पर विचाराें की असहिष्णुता ने वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। अभिनव और प्रगतिशील विचारों को समूल नष्ट करने के लिए राष्ट्र स्तर पर विभिन्न देशों में ईश निंदा के लिए प्राण दंड के नियम बनाए गए हैं, किन्तु यह भारतीय संस्कृति या सभ्यता का हिस्सा नहीं है। भारत में विचारकों को विशेष सुरक्षा प्राप्त थी, इसलिए घोर नास्तिक चार्वाक को भी दार्शनिक का स्थान प्राप्त था। भारतवर्ष में प्रदुर्भूत मत पंथों के वैचारिक अंतर के बाद भी परस्पर समन्वय और सामंजस्य का गुण कभी धूमिल नहीं हुआ।
अर्थवेद में उद्धत है –

ओम अकामो धीरोअमृतः स्वयं भू रसेन तृप्तों न तमेव।
विद्यवान न विभाय मृत्योपरात्मानं धीरमजरं युवानम्।।
(अथर्ववेद 10/6/44)

इस एक सर्वव्यापक तत्व को देखो, जो सर्वथा अकाम है, जो सर्वथा धीर है, जो अमर है, स्वयंभू है, जो आनंद रस से परिपूर्ण है, जिसमें कोई न्यूवता नहीं है, उस धीर, अजर सदा तरूण को आत्म स्वरूप जानकर ही मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता है।
यजुर्वेद का यह मंत्र प्रस्तुत करना समीचीन प्रतीत होता है –

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि।
समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। (यजुर्वेद 36/16)

निष्कर्ष :

सम्पूर्ण पृथ्वी को परिवार के रूप में अंगीकार करने की परंपरा ही हिन्दुत्व है, यह हिन्दू धर्म के संस्कार में है इसलिए विश्व का अल्पसंख्यकतम धर्म पारसी का अस्तित्व अपने उद्‌गम स्थान पर न होकर भारत में ही। इस्लाम का अहमदिया भारत में अगर अधिक सुरक्षित है तो हिन्दुत्व के विश्व बंधुत्व के दर्शन के कारण ही है, यदि हम श्रेष्ठ विश्व का निर्माण करने के लिए उत्सुक हैं, तो हमें विश्व बंधुत्व की भावना को आत्मसात करना चाहिए, इसमें सार्वभौमिक कल्याण की भावना निहित है। यह देश कालाजीत अवधारणा है, जो आपसी सद्धाव, विश्वास और एकात्म वाद पर टिकी है। कठोपनिषद का यह श्लोक यहां उद्धत करना प्रासंगिक है –

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धरा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।
(कठोपनिषद अध्याय–1 वल्ली 3 मंत्र 14)

हे मनुष्यों उठो जागो ज्ञानी मनुष्य के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो। ज्ञान के बिना इस संसार में कुछ भी उन्नति साध्य नहीं हो सकती। यह आत्मज्ञान और आत्मोन्नति का मार्ग अत्यंत कठिन है जैसे तलवार की तीक्ष्ण धार पर चलना।

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि ज्ञान प्राप्ति विश्व बंधुत्व के लिए अति आवश्यक है किनतु जो ज्ञान मात्र में उपासना पद्धति के आधार पर भेद उत्पन्न करता हो और एक दूसरे के जीवन को समाप्त करने का आदेश देता हो, वह कभी भी सत्य नहीं हो सकता। विश्व बंधुत्व के लिए ऐसे विष वेलि रूपी ज्ञान से

मानवता को बचाना होगा तभी संसार में उन्नयन और शांति की स्थापना, मूर्त रूप धारण करने में सक्षम होगी।

संदर्भ–सूची

1. विष्णु पुराण 3.3.1
2. बृहस्पति आगम/सूत्र
3. मनुस्मृति 6.92
4. श्रीमद् भागवत गीता 18.66
5. हिन्दुत्व। विनायक दामोदर सावरकार
6- The Soul of India, Bipin Chandra Pal
7. याज्ञवल्क्य स्मृति 1.122
8. पद्म पुराण। सृष्टि 19/357
9. श्री रामचरितमानस उत्तरकांड गोस्वामी तुलसीदास
10. कठोपनिषद अध्याय 1 वल्ली 3 मंत्र 14
11. चाणक्य नीति 12/13
12. अथर्ववेद 3.30.3
13. ऋग्वेद 1/164/46
14. तैत्तरीय उपनिषद शांति पाठ